International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.2 Nov-Dec 2024

# अमृतलाल नागर के कहानियों का अध्ययन

**डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ**
हिंदी विभाग प्रमुख,डॉ. श्री.नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज गोवे - कोलड,
तहसील - रोहा, जिला - रायगढ़, महाराष्ट्र,
**Corresponding Author: डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ**
**Email-** sureshamalpure05@gmail.com
**DOI- 10.5281/zenodo.14644062**

**सारांश:-**

आधुनिक काल के प्ररम्भिक साहित्यकारों में भारतेन्दु जी ,महावीर प्रसाद द्विवेदी ,आदि महानुभावों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध करते हुए कई साहित्यकारों को प्रकाश में लाने का कार्य किया है। इस कथासाहित्य में प्रेमचंद के बाद अमृतलाल नागरजी बहुचर्चित और प्रख्यात कथा - साहित्यकार के रूप में सामने आते है। उनके साहित्य में विचारों की गहनता ,समाज का दुःख ,महानता एवं मानवता जैसे भाव का स्पष्टीकरण दिया है। साहित्य और समाज का अटूट सम्बन्ध होने के कारन साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। समाज में घटित हर एक गतिविधिओं को साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। यह अभिव्यक्ति कविता ,नाटक , कहानी ,उपन्यास जैसी अनेक विधाओं में होती है। इस सभी विधाओं में समाज का यथर्थ चित्रण मार्मिक और सक्षम रूप से साहित्यकार करने की कोशिश करता रहता है। यह कार्य हिंदी साहित्य के महान लेखक अमृतलाल नागर जी ने किया है। उनके कहानियों में आधुनिक युग की जटिलता ,समाजजीवन की व्यापकता अधिक मात्रा में दिखाई देती है। गहन सामाजिक मयथर्थ कभी चित्रण उनके कथासाहित्य में हुआ है। सामाजिक जीवन को समझने के लिए समाज का सूक्ष्म अध्ययन करना पड़ता है। समाज में स्थापित उच्च ,मध्य और निम्न वर्ग की स्थिति तथा नारी की स्थिति एवं दलित ,किसान मजदुर की स्थिति का चित्रण किया है। उनके साहित्य में उच्च वर्ग भले ही काम मात्रा में अभिव्यक्त हुआ हो परन्तु वह बड़ी सक्षमता से अभिव्यक्त हुआ है। उच्च वर्ग ही शोषण व्यवस्था का निर्माता है परन्तु वह अपने आप को मध्य वर्ग और निम्न वर्ग का रखवाला ,मसीहा और अन्नदाता मानता है।

**कुंजी शब्द :-** औद्योगिकीकरण , यांत्रिकता , परिवर्तन , पूंजीवाद , मानवतावाद , संघर्ष , भटकाव , नगरीकरण, साम्प्रदायिकता , परम्परा आदि।

**संशोधन पद्धति:-** सर्वेक्षणात्मक एवं विस्लेषणात्मक संशोधन पद्धति।

**शोध के उद्देश्य:-**

1. अमृतलाल नागर का परिचय को जानना।
2. हिंदी साहित्य में अमृतलाल नागर का स्थान को देखना।
3. अमृतलाल नागर के कहानियों में समाज व्यवस्था को देखना ।
4. अमृतलाल नागर के कहानियों में सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालना ।
5. अमृतलाल नागर के कहानियों में भारतीय समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण करना।

**प्रस्तावना:-**

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानी, उपन्यास एवं नाटककार, साहित्य एवं शिक्षा जगत में पद्मभूषण से सम्मानित ,अनुवाद एवं बालसाहित्य के भारतीय चेतना के प्रेरक उपन्यासकार अमृतलाल जी माने जाते है। आधुनिक काल में प्रारंभिक साहित्यकारों में नागर जी का नाम विशेष है। ऐसे महान रचनाकार का जन्म एक सुसंस्कृत गुजराती ब्राह्मण परिवार में १७ अगस्त १९१७ को गोकुलपुरा ,आगरा में हुआ। अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद पहले नौकरी और बाद में स्वतंत्र लेखन कार्य शुरू किया।

**रचनाएँ;-**

**उपन्यास -** महाकाल ,सेठ बांकेमल ,बून्द और समुद्र , सतरंज के मोहरे , सुहाग के नूपुर , अमृत और विष , सात घुगातवाला मुखौटा , मानस का हंस , नाचौ बहुत गोपाल , और खंजन नैन आदि।

**कहानी –** वाटिका , अवशेष , तुलाराम शास्त्री , आदमी नहीं नहीं , पांचवा दस्ता ,एक दिल हजार दस्ता , एटमबम, पीपल की पारी , कालदण्ड की चोरी , सिकंदर हार गया , एक दिल हजार अफ़साने और मेरी प्रिय कहानियाँ आदि।

**नाटक -** युगावतार, बात की बात, चन्दन वन उतर चढाव आदि ।

**बालसाहित्य -** नटखट चची,निंदिया आजा ,बजरंगी नौरंगी , बजरंगी पहलवान , हमरे युग निर्माता , इकलौता बल ,सोमू का जन्मदिन , आओ बच्चे नाटक लिखे , अक्ल बड़ी या भैंस फूलों की घाटी आदि।

**अनुवाद -** बिसाती, प्रेम की प्यास, आँखों देखा ग़दर, दो फक्कड़ आदि।

**संस्मरण -** ग़दर के फूल ये कोठेवालियां, जिनके साथ जिया आदि।

**व्यंग्य -** नवाबी मनसद, सेठ बांकेमल, कृपया दाएं चलिए, चककलास और मेरी श्रेष्ट रचनाएँ आदि।

**सम्मान -** बतुकप्रसाद पुरस्कार -२०१५, प्रेमचंद पुरस्कार -१९६३,सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार -१९७० , साहित्य अकादमी -१९६७ , अखिल भारतीय वीरसिंहदेव पुरस्कार -१९७२ , राज्य साहित्य पुरस्कार -१९७४ , संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार -१९७१, आदि।

**अमृतलाल नागर के कहानियों का अध्ययन:**

अमृतलाल नागर जी की गिनती उन लेखकों में होती है, जिन्हों ने न तो परम्परा को नाकारा और न ही आधुनिकता से नाता तोडा। हिंदी के गंभीर कथाकारों में सर्वाधिक लोकप्रिय है। उनकी जगत को देखने की दृष्टी एकांगदर्शी न होने के कारन वे उसकी अच्छे और बुराइओं दोनों को देखते है किन्तु बुराइओं से उठकर अच्छाईओं की सारे विफलता को भी वे मनुष्यत्व मानते है।

**प्रायश्चित:-**

प्रस्तुत कहनिमे मनुष्य के जीवन में यौवन अवशता को अत्यंत महत्व होता है। इस अवशता में त्याग , सदाचार ,देशभक्त बनाकर कार्य करते है, तो कोई युवक विलासी ,लोलुपी ,व्यभिचारी बन जाते है। कई युवक अपना जीवन दो कौड़ी का बनाकर बर्बाद करते है। पंडित जी वृद्ध है ,जो हारमोनियम मुक्त को पढ़ते है ,परन्तु मुक्त पर प्रेम हो जाता है। मुक्त गावं के उच्च के रायबहाद्दुर डॉ शंकरलाल अग्निहोत्री थे. मणिधर और मुक्त भी प्रेम करते है। उनका प्रेम और बढ़ जाता है। जब मणिधर का असली चेहरा मुक्त के सामने पेश होता है तो उसे छोड़ देती है। तब पंचायत बुलाई जाती है वहां पंडित और मणिधर भी दोनों निर्दोष ठहरे जाते है। सारा इल्जाम मुक्त पर ही आ जाता है। नारी का यह अबला रूप और जीवन दोषमुखी नहीं रहा, सजा उनको बी भुगतनी पड़ती है।

**सिकंदर हर गया:-**

प्रस्तुत कहानी का जीवनलाल एक ऐसा पात्र है जो स्त्रियों के आकर्षण का केंद्र है ,उसने अपनी चंचलता एवं बुद्धि का प्रयोग कर कई स्त्रियों को अपना शिकार बनाया है। परोपकार से दबकर कुछ मध्यवर्गीय गरीब स्त्रियां और कुमारिओं को अपनी इच्छा के आगे समर्पित कराया था। वह अपने दुराचारी वृत्ति का दास था। किन्तु जब अपनी ही स्त्री किसी पराये मर्द के साथ सम्बन्ध बनाते देख वह उसपर उंगली उठता है। तब पत्नी लीला के उत्तर से निरुत्तर हो जाता है - " मगर मेरी बुराई की जड़ भी तुम्ही हो। परै औरतों की इज्जत बिगड़ने में मजा आता है ? मई भी कभी परै थी, जब कभी उपदेश न दिया। "-१

**१४ अप्रैल:-**

प्रस्तुत कहानी में महानगर मुंबई के भीड़ -भाड़ भरे शहर के व्यस्त जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। बेम विस्फोट और आगजनी के बाद किस तरह जीवन तुरंत उसी पटरी पर दोबारा उसी गति से सब कुछ भूलकर चलता है यही दिखने की कोशिश की है।

एक मराठी मजदुर अपने दूसरे साथियों के साथ गोदाम से बोर - निकल - निकल ठेले पर लड़ते हुए एक सेकेण्ड अपने दूर तक फैले हुए खंडहरों को देखकर भावावेश में कुछ अपने - आप और कुछ अपने साथियों को सुनाता हुआ बोलता है - " केवढी मोठी आग लागली होती हो। पीछे से सेठ चिल्लाया - अच्छा - अच्छा लगी हो की हो चलो अपना काम करो। " -२

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में महानगरीय व्यस्त जीवन में ऐसी घटनाएं आम बन जाती है यही दिखने की कोशिश की है।

**गौने की तलप:-**

प्रस्तुत कहानी में नारी की भावना को लेकर नारी की विभिन्न समस्याओं को लेकर चित्रित करने की कोशिश की है। नायिका मूसा रानी है जो बड़ी चतुर है। तुकाराम शास्त्री के साथ इसकी शादी हो जाती है। मुसरणी जनम से ही लखनऊ में अर्थात शहरी वातावरण में पाली और बड़ी हो गई है। उनके जिउवन में दो रोमांटिक घटनाएँ होने के बावजूद भी शास्त्री जी का रोमांस अधिक प्रभावशाली दिखाया है। मुसरणी को मालूम है कि तुलाराम की शादी हुई है तो भी उसके साथ आचरण कराती है ,उसे देखकर कहती है - " मैं कहे गई ? तुम का हमर सैया हो? "-३

उदार और विशाल ह्रदय से नारी पर अन्याय न करते हुए ,मधुर मुलायम शब्दों में नारी का चित्रण इस कहानी में किया है। पता नहीं पुरुष होकर भी नागर जी ने नारी के प्रति इतना ज्ञान ,उनकी भाषा ,रहन -सहन , चल - चलन ,हर समाज के नारी का अलग -अलग रूप है। स्त्रियों के सम्बन्ध से कहा जाता है कि उनके तीन जनम होते है - एक माता - पिता के यहाँ दूसरा शादी के बाद और तीसरा बच्चे होने के बाद। हर मोड़ पर एक नया जनम नारी ने पाया है।

**कादिर मियाँ का भौजी:-**

प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक रिश्तों को दिखाया है। यह हास्यव्यंग्य शैली में लिखी हुई कहानी है। इस कहानी में पति द्वारा अत्याचार से पीड़ित एवं कल्हनदानी बेगम के रूप में कादिर मियाँ की भौजी सुन्दर और सलोनी है। अनूठा देवर और भाभी का नरिष्ट इस कहानी का मुख्या केंद्रबिंदु है। भैया भाभी के साथ कितना भी बुरा बर्ताव करें फिर भी भाभी सलूक के साथ संसार कराती है। अपने पति के लिए तरकारी बेचकर शराब की बोतल और चाट का इंतजाम कराती है। कादिर कहता है -" भौजी देखने में इतनी खूबसूरत है कि बड़े -बड़े नवाब इन पर कुर्बान होते है। "- ४

भौजी एक आदर्श पत्नी थी। लाखों रुपये के जेवर किसी नवाब ने उसके सामने रखें थे लेकिन भौजी ने उसे देखा तक नहीं। पति मर- पिट करता है तो भी उसका साथ नहीं छोड़ती उसे प्रेम के साथ बाँहों में लिपटती है। पति का एक हाथ कटा है फिर भी उसका सहारा बन जाती है। भौजी के प्रति कादिर के मन में विचार आता है कि -साला कमीना ऐसी परिजादि सी सहजदमंद औरत को आये दिन मारपीट करता है। भाई का कॅशे सा व्यवहार कादिर को पसंद न था। समजता है कि तेरा हाथ काम से गया है और वर तेरी परवरिश कराती है। तुझे शर्म आणि चाहिए। जोरू के पैसे पर मजा करता है और उसे ऊपर से मरता है। "- ५ कादिर छोटा देवर है फिर भी अपनी बी हाउजी की पीड़ा ,वेदना को देखकर भाई को पीटता है।

**भारत पुत्र नौरंगीलाल:-**

प्रस्तुत कहानिसंग्रह में वर्त्तमान समय के ज्वलंत प्रश्नों को उजागर किया है। समाज ,राजनीती , धर्म ,संस्कृति ,शिक्षा के क्षेत्र में मनुष्य के दोगले पैन का अत्यंत कटु यथार्थ का चित्रण किया है। पात्र नौरंगीलाल को भारत रत्न का किताब चाहिए और इस कहानी का पात्र हमेशा दो सिद्धांत रखता है। नौरंगीलाल को एक तो मंत्रिपद चाहिए अन्यथा भारत रत्न का ख़िताब इस मांग को लेकर जब वह मुख्यमंत्री के यहाँ गया , तब मुख्यमंत्री जी उससे कहते है की तुम्हे मंत्रिपद क्या राज्यपाल पद बना देता हूँ।

मस्वार्थी नौरंगीलाल यह सलाह सुनाने के बाद वह भारत पुत्र की मूर्ति बनाने के लिए जयपुर से कारगिल और डिज़ाइन मंगवाकर चौराहे पर पत्थर की छतरी बनता है। उद्घाटन के लिए मुख्यमंत्री आते है तब कहता है - महाराज जी मुझे तो महापुरसत बनाना था।

जब अपने मुझे न बनाया और ये सिछा दी की पैसा जनता का है तो मैं जनता के जोर पर भारत पुत्र बन गया। इसमें धोखे की बात ही कहाँ उठती है ? ये तो सिद्धांत की बात है। "-६

**निष्कर्ष:-**

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम कह सकते है कि ,अमृतलाल नागर जी के कहानियों में समय के सच को अभिव्यक्त करने का काम किया है। उनकी संवेदनशीलता , और ह्रदय की कोमलता , स्त्री जीवन की पीड़ा ,दुःख - दर्द आदि कई दर्जनों नारी की समस्याओं को लेकर कहानियों में चित्रण किया है। उनके कहानीयों में प्रेम और मानवीय संवेदनमा का भी यथार्थ चित्रण मिलता है। नारी जीवन के विभिन्न समस्या को उजागर करने की कोशिश की है। नागर जी की कहानियाँ आज भी कई अर्थों में प्रासंगिक लगाती है यह विशेष उनके कहानियों में दिखाई देता है।

**संदर्भ ग्रन्थ:-**

1. अमृतलाल नागर - सिकंदर हर गया, राजपाल एंड सनस दिल्ली, पृ. १०
2. अमृतलाल नागर - १४ अप्रैल पृ. २५
3. प्रा. शशि नारायण सूर्यवंशी - अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में नारी पात्र पृ. ११४
4. अमृतलाल नागर- कादिर मियाँ का भौजी पृ. ३५
5. अमृतलाल नागर - कादिर मियाँ का भौजी पृ. ३८
6. अमृतलाल नागर - भारत पुत्र नौरंगीलाल पृ. १६